# क्वालालम्पुर (मलेशिया) में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय दलित कन्वेन्शन को सम्बोधन

## जातिविहीन समाज की स्थापना के लिए आपको देश का हुक्मरान बनना होगा

मलेशिया की राजधानी क्वालालम्पुर में प्रथम विश्व दलित सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में मान्य कांशीराम जी ने जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि सबसे पहले मैं आपको 'जातिविहीन समाज' के निर्माण की दिशा में इस अन्तर्राष्ट्रीय कन्वेंशन का आयोजन करने के लिए हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ। मुझे दुःख है, कि पार्टी के कार्यों में अति व्यस्तता के कारण मैं इस अवसर पर दिये जाने वाले अपने भाषण को लिख नहीं पाया, इसलिए मैं सीधे ही आपसे मुखातिब हो रहा हूँ।

## जाति का विनाश

सन् 1936 में लाहौर के जात-पात तोड़क मण्डल ने बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर से 'जाति' विषय पर उनके द्वारा लिखे गये निबन्ध को मण्डल के अधिवेशन में पढ़ने के लिए आमंत्रित किया, लेकिन उस अधिवेशन में बाबा साहेब अम्बेडकर को वह निबन्ध प्रस्तुत नहीं करने दिया गया। वह निबन्ध बाद में एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है, जिसका शीर्षक था 'एन्हिलेंशन ऑफ कास्ट' अर्थात जाति का विनाश। 1962-63 में जब मुझे इस पुस्तक को पढ़ने का मौका मिला तो मुझे भी ऐसा महसूस हुआ कि शायद 'जाति' का विनाश संभव है लेकिन बाद में जब मैंने जाति व्यवस्था

और जातीय आचरण का गहराई से अध्ययन किया तो मेरी सोच में परिवर्तन आने लगा। मैंने 'जाति' का अध्ययन महज किताबों से नहीं बल्कि असल जिन्दगी से किया है, जो लोग करोड़ों की संख्या में अपने-अपने गाँव छोड़ कर दिल्ली, मुम्बई, कलकत्ता तथा अन्य बड़े-बड़े शहरों में आते हैं वे अपने साथ और कुछ नहीं, कैवल अपनी 'जाति' को लाते हैं। वे अपने छोटे-छोटे झोपड़े, छोटी-छोटी जमीनें और मवेशी आदि सब कुछ पीछे गाँव में ही छोड़ आते हैं और केवल अपनी 'जाति' को साथ लेकर ही शहर की गंदी बस्तियों, नालों, रेल की पटरियों के किनारे बस जाते हैं। अगर लोगों को अपनी 'जाति' इतनी ही प्रिय है तो हम 'जाति' का विनाश कैसे कर सकते हैं? इसलिए मैंने 'जाति' के विनाश की दिशा में सोचना बन्द कर दिया।

आप लोगों ने 'जातिविहीन समाज' की दिशा में बढ़ने के उद्देश्य से इस कन्वेंशन का आयोजन किया है। मेरा उद्देश्य भी एक जाति विहीन समाज की स्थापना करना है। लेकिन 'जाति' कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसे मात्र आपके चाहने भर से ही नष्ट किया जा सकता है। 'जाति' को नष्ट करना लगभग असंभव है, तो हमें क्या करना चाहिए?

## जाति के निर्माण के पीछे एक विशेष उद्देश्य है

'जाति' का निर्माण बिना किसी उद्देश्य के नहीं किया गया। इसके पीछे एक गहरा उद्देश्य और स्वार्थ छिपा हुआ है। जब तक यह उद्देश्य अथवा स्वार्थ जिन्दा रहता है 'जाति' का विनाश नहीं किया जा सकता। आप ब्राह्मणों अथवा सवर्ण जातियों को इस प्रकार 'जाति विहीन समाज की पुर्नस्थापना' के लिए कन्वेंशन, सम्मेलन, विचार-गोष्ठी आदि आयोजित करते हुए नहीं देखेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि 'जाति' का निर्माण इन्हीं वर्गों द्वारा अपने क्षुद्र स्वार्थो की पूर्ति के लिए किया गया है। 'जाति' के निर्माण के कारण केवल मुट्ठीभर सवर्ण जातियों को ही फायदा हुआ है और 85 प्रतिशत बहुजन समाज को पिछले हजारों वर्षो से पीढ़ी-दर-पीढ़ी नुकसान ही होता रहा है और वे अपमान और शोषण का शिकार बनते रहे हैं। अगर 'जाति' के निर्माण से सवर्ण वर्गों को ही फायदा होता रहा है तो भला वे इसके विनाश के लिए पहल क्यों करेंगे? इस तरह की कान्फ्रेंस, सम्मेलन केवल हम लोग ही आयोजित कर सकते हैं, क्योंकि हम 'जाति व्यवस्था' के शिकार हैं। इसका

फायदा पाने वालों को 'जाति' के विनाश में कोई रुचि नहीं हो सकती, बल्कि वे तो 'जाति व्यवस्था' को और अधिक मजबूत देखना चाहते हैं, ताकि जाति के आधार पर उन्हें मिलने वाली सभी सुविधायें भविष्य में भी जारी रहें।

इस सभागृह में जो लोग बैठे हैं, उनमें से अधिकांश शायद आज स्वयं परोक्ष रूप से जाति के शिकार न हों। लेकिन हम सभी का जन्म ऐसे लोगों अथवा समाज के बीच हुआ जोकि जाति के शिकार हैं इसलिए हमें जाति के विनाश की दिशा में सोचने की जरूरत है।

लेकिन जब हम 'जाति' के विनाश की बात कहते हैं तो इसके लिए भी हमें सर्वप्रथम 'जाति' के अस्तित्व को स्वीकार करना होगा। जाति की अनदेखी अथवा उपेक्षा करके हम 'जाति' का विनाश नहीं कर सकते हैं।

हमारे अंदर 'जातिविहीन' समाज का निर्माण करने की भावना हो सकती है, लेकिन इसके साथ भी सत्य है, कि अभी निकट भविष्य में 'जाति' के विनाश की भावना लगभग न के बराबर है। तो जब तक 'जाति' का पूरी तरह विनाश न हो जाये तब तक हमें क्या करना चाहिए? मेरा यह मानना है, कि जब तक हम एक 'जाति विहीन' समाज की स्थापना करने में सफल नहीं हो जाते, तब तक 'जाति' का उपयोग करना होगा। अगर ब्राह्मण 'जाति' का उपयोग अपने फायदे के लिए कर सकते हैं तो मैं उसका इस्तेमाल अपने समाज के हित में क्यों नहीं कर सकता?"

## दोधारी तलवार

"जाति एक दोधारी तलवार के समान है जो दोनों तरफ से टकराती है। अगर आप इसे इस तरफ चलायें (अपने हाथ को दायीं तरफ ले जाते हुए) तो यह इस तरफ काटती है। अगर इसे आप दूसरी दिशा में ले जायें (हाथ को बायीं तरफ लहराते हुए) तो यह दूसरी तरफ काटती है। तो मैंने 'जाति' को, दोधारी तलवार को इस तरह इस्तेमाल करना शुरू किया कि इसका फायदा बहुजन समाज को मिले और उच्च वर्ग को इसका फायदा पहुँचना बन्द हो जाये। बाबा साहेब अम्बेडकर ने 'जाति' के आधार पर ही अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लोगों को उनके सामाजिक और राजनैतिक अधिकार दिलाये। "जाति का सहारा लेकर ही उन्होंने सन् 1931-32 राउन्ड

टेबल कान्फ्रेन्स में इन वर्गों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था करवाई। लेकिन इस मुद्दे पर गांधी जी के आमरण अनशन के कारण इन वर्गों को पृथक निर्वाचन का अधिकार खोना पड़ा।"

## पृथक निर्वाचन

कई लोग मुझसे अक्सर पूछते हैं, कि "जिस तरह बाबा साहेब अम्बेडकर ने पृथक निर्वाचन के लिए संघर्ष किया, उसी प्रकार का संघर्ष आप भी क्यों नहीं शुरू करते?" आज तक मैंने अपना एक भी मिनट 'पृथक निर्वाचन' के मामले पर खराब नहीं किया है। अगर 'पृथक निर्वाचन' अधिकार बाबा साहेब अम्बेडकर द्वारा ब्रिटिश शासन के दौरान भी संभव नहीं हो सका, तो आज यह मेरे लिये किस प्रकार संभव हो सकता है जब कि देश में मनुवादी समाज के लोगों का राज है? आज यह एकदम असंभव हैं।

## 'जाति' के विशेषज्ञ

बाबा साहेब अम्बेडकर ने अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजाति के लोगों को 'जाति' के हथियार का इस्तेमाल करने लायक बनाया था। इसी कारण वे ब्रिटिश हुकूमत से इन वर्गों के लिए कई सुविधायें जुटाने में सफल रहे। लेकिन अंग्रेजों के भारत छोड़ने के बाद केवल तीन लोग ही ऐसे रहे हैं जिन्हें 'जाति' के हथियार को इस्तेमाल करने में महारत हासिल है। सबसे पहले व्यक्ति जवाहर लाल नेहरू थे, दूसरा व्यक्ति श्रीमती इंदिरा गांधी थीं। और तीसरा व्यक्ति कांशीराम (तालियाँ)।

नेहरू ने 'जाति' के हथियार को इतनी निपुणता और कामयाबी के साथ इस्तेमाल किया कि बाबा साहेब अम्बेडकर लगभग निस्सहाय से हो गये। नेहरू 'जाति' के उपयोग एवं मनुवादी सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने की कला में पारंगत थे। उनके बाद श्रीमती इंदिरा गांधी भी 'जाति' का हथियार चलाने और ब्राह्मणवादी व्यवस्था को उसका लगातार फायदा पहुँचाने के खेल में माहिर थीं। लेकिन आज अगर दिल्ली में किसी भी कांग्रेसी से पूछें कि "क्या आपको 'जाति' के इस्तेमाल से कोई फायदा मिल रहा है? तो वह यहीं कहेंगे, नहीं, हमें 'जाति' का कोई लाभ नहीं मिल रहा है। हमें नहीं मालूम कि किस तरह 'जाति' से फायदा उठाया जा सकता है। यह तो

सिर्फ कांशीराम को मालूम है, कि किस तरह 'जाति' का इस्तेमाल अपने हित में किया जा सकता है (हँसी)।

अगर आप ब्राह्मणों को 'जाति' से फायदा उठाने से रोक सकते हैं तो वो 'जाति' की इस तलवार का हमारे खिलाफ इस्तेमाल करने से पहले कई बार सोचेंगे, मैंने 'जाति' को दोधारी तलवार का इस्तेमाल अपने समाज के हित में करना सीख लिया है। 'जाति' जो कि अभी हमें अपने लिए एक समस्या नजर आती है, अगर हम इसका ठीक तरह से उपयोग करना सीख जायें तो यह हमारे लिए एक फायदेमंद चीज बन सकती है। आज जो हमारी 'समस्या' है वह कल हमारे लिए 'अवसर' भी बन सकती है बशर्ते हम उसे ठीक तरह से (अपने हित में) इस्तेमाल करना सीख जायें।

## भारतीय शरणार्थी

हमें इतिहास से सबक सीखने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए। हमें बाबा साहेब अम्बेडकर का मूवमेन्ट आगे बढ़ाने का काम और अधिक तेजी से करना होगा। 1932 में बाबा साहेब अम्बेडकर ने दलितों (अनुसूचित जाति/जनजाति) के लोगों के लिए प्रथम निर्वाचन की माँग की। दस वर्ष बाद 1942 में उन्होंने दलितों के लिए 'पृथक् बस्तियों' की माँग उठायी। क्योंकि वे चाहते थे कि दलित समुदाय के लोग हिन्दुओं पर किसी तरह से निर्भर न होकर पूरी स्वतंत्रता के साथ जीवन यापन करें। लेकिन आज स्थिति क्या है? आज देश में लगभग 45 लाख हैक्टेयर जमीन पर खेती होती है। हमारे समाज के लोग मेहनत करके फसल पैदा करते हैं। लेकिन जिन खेतों पर वे काम करते हैं, उन जमीनों पर उनका मालिकाना हक नहीं होता है तथा वे मनुवादी जमींदारों के अन्याय और शोषण के शिकार होते रहते हैं। इस स्थिति से तंग आकर वे अपने गाँवों को छोड़कर रोजगार और सम्मानपूर्वक जिन्दगी की तलाश में बड़े-बड़े शहरों में आ जाते हैं तथा गंदी बस्तियों, पुलों के नीचे, नालों तथा रेलपटरी के किनारे और अन्य गंदे थानों पर जानवरों से भी ज्यादा बुरी जिन्दगी जीने को मजबूर हैं। इस 'संकट प्रवास' के कारण लगभग 10 करोड़ लोग अपने-अपने गाँवों, छोटी-छोटी जमीनों, घर-झोंपड़ों तथा मवेशियों आदि को पीछे छोड़कर शहरों में आ गये हैं। आज से 10 वर्ष पहले देश में रहने वाली शहरी आबादी लगभग 5 करोड़ थी। आज

यह संख्या 16 करोड़ है। ये लोग गंदे स्लमों, सड़कों आदि स्थानों पर रह रहे हैं। हम इन्हें भारतीय शरणार्थी कहते हैं। इन लोगों की समस्याओं के बारे में किसे सोचना चाहिए? भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय तथा शहरी निवास मंत्रालय को इन लोगों की समस्याओं के बारे में हल ढूँढ़ना चाहिए। भारत की सरकार इन 10 करोड़ लोगों के अतिरिक्त सभी के विकास के लिए कोई न कोई योजना बनाती है, लेकिन इन 10 करोड़ लोगों के अतिरिक्त सभी के विकास के लिए कोई न कोई योजना बनाती है, लेकिन इन 10 करोड़ भारतीय शरणार्थियों की बुरी दशा पर कोई ध्यान नहीं देता। हमारे सालाना बजट में इन लोगों के लिए कोई पैसा नहीं रखा जाता। इतनी बड़ी संख्या में मौजूद लोगों के लिए कोई विशेष विभाग अथवा मंत्रालय नहीं है। हमारे यहाँ, 1947 में पाकिस्तान से आये शरणार्थियों, तथा अन्य स्थानों में आये शरणार्थियों के लिए तो अलग-अलग विभाग तथा मंत्रालयों की व्यवस्था की गयी है तथा उन पर करोड़ों-अरबों रुपया खर्च किया जाता रहा है लेकिन अपने ही देश में शरणार्थी बने इन 10 करोड़ लोगों की ओर किसी भी सरकार का ध्यान नहीं जाता।

चूँकि ये लोग अपनी जमीन, घर, मवेशी गाँवों में ही छोड़कर केवल अपनी 'जाति' को साथ लेकर शहरों की तरफ आये हैं इससे मेरा काम बहुत आसान हो गया है। ये दस करोड़ शरणार्थी भारत के मनुवादी शासकों के लिए एक समस्या है, लेकिन हमारे लिए वे एक बहुत बड़ा साधन, एक बहुत बड़ी ताकत है। जिस 'जाति' के आधार पर इन करोड़ों लोगों को अपमानित किया गया है, पिछाड़ा गया है उसी 'जाति' का इस्तेमाल हम इन लोगों को अन्याय-शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए कर सकते हैं। आगामी नवम्बर में दिल्ली, राजस्थान और मध्य प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनावों के बाद हमने इन लोगों की मुक्ति के लिए 'भारतीय शरणार्थी आंदोलन' चलाने की योजना बनाई है। मैं मात्र इस उम्मीद में खाली नहीं बैठा रहूँगा कि 'जाति' एक दिन अपने आप समाप्त हो जायेगी। बल्कि जब तक भारतीय समाज में 'जाति' जिन्दा है तब तक मैं इसको, अपने समाज के हित में इस्तेमाल करता रहूँगा।

## मनुवादी प्रपंच

आइये, अब मैं 'जाति' का इस्तेमाल अपने हित में करते समय होने वाले अनुभवों के बारे में आपको बताता हूँ, कि आज मैं 'जाति' के शिकार लोगों (बहुजन समाज) को संगठित करके 'जाति' को अपने हित में इस्तेमाल करने के लिए तैयार कर रहा हूँ। मैं उन्हें बाबा साहेब अम्बेडकर के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित कर रहा हूँ। मैं अपने समाज को अर्थात् 'जाति' का शिकार हुए लोगों को 'जाति' की इस दोधारी तलवार को अपने हित में इस्तेमाल करने लायक बना रहा हूँ। आज हरेक मनुवादी पार्टी और नेता मेरे द्वारा 'जाति' का इस्तेमाल किये जाने के कारण घबराये हुए हैं। इस 'कांशीराम चमत्कार' को रोकने के लिए सभी मनुवादी दल कोशिश कर रहे हैं। पहले राजीव गांधी ने कोशिश की। फिर वी.पी. सिंह, नरसिम्हाराव आदि ने कोशिश की। आज वही कोशिश भारतीय जनता पार्टी कर रही है। लेकिन ये सभी लोग अपना खेल खेल रहे हैं और मैं अपना खेल खेल रहा हूँ (तालियाँ)।

## बहुजन समाज पार्टी को पूरे देश में मान्यता प्राप्त करनी है

'जाति' से फायदा उठाने वाले मनुवादी लोगों ने इसे बनाया, ताकि इसकी सहायता से वे दूसरों पर निरंतर राज कर सकें। उन्हीं लोगों ने आज तक इसे बचाये रखा, ताकि उनके एकछत्र राज पर आँच न आने पाये। किसी व्यवस्था का निर्माण उसको बनाये रखने के बनिस्बत अधिक कठिन होता है। एक बार यदि आप कोई व्यवस्था बना दें तो उसको चलाना तथा कायम रखना अधिक मुश्किल काम नहीं है।

अगर आप 'जाति' को नष्ट करना चाहते हैं तो आपको मनुवादी समाज को इसका फायदा लेने से रोकना होगा। जब तक फायदा उठाने वालों को 'जाति' का इस्तेमाल करते रहने की छूट मिलती रहेगी, तब तक 'जाति' के शिकार लोग इससे पीड़ित रहेंगे। इसलिए आपको 'जाति' को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करना सीखना होगा और मनुवादी व्यवस्था के अधिकारों को इसका लाभ लेने से रोकना होगा। आपको 'जाति' को अनदेखा नहीं करना चाहिए बल्कि इसके अस्तित्व को स्वीकार करना चाहिए। 'जाति' का सफलतापूर्वक इस्तेमाल करने के कारण ही बहुजन समाज पार्टी आज देश की चौथी सबसे बड़ी पार्टी बन गयी है। देश में कुल 70 मान्यता प्राप्त राजनैतिक

दल हैं और हम 66 अन्य दलों से आगे हैं। आज केवल कांग्रेस, बी.जे.पी. और सी.पी.आई. (एम) ही हमसे आगे हैं। 1984 में जब हमने पार्टी बनाई थी उस समय दूसरी पार्टियाँ हमसे कहती थीं कि बी.एस.पी. केवल उत्तर प्रदेश तक ही सीमित रहेगी। लेकिन आज बी.एस.पी. केवल उत्तर प्रदेश में ही नहीं बल्कि मध्य प्रदेश, पंजाब, जम्मू-कश्मीर तथा हरियाणा में भी मान्यता प्राप्त पार्टी बन चुकी है। यह देखकर सभी सवर्ण जातियाँ (मनुवादी समाज) बेहद दुखी हैं। और मैं भी खुश नहीं हूँ। वे लोग इसलिये दुखी हैं क्योंकि बी.एस.पी. अन्य राज्यों में भी मजबूती के साथ आगे बढ़ रही है और मैं इसलिए दुखी हूँ क्योंकि बी.एस.पी. देश के सभी प्रदेशों में मान्यता प्राप्त पार्टी नहीं बन पायी है। मैं चाहता हूँ, कि बी.एस.पी. देश के सभी राज्यों में, यहाँ तक कि महाराष्ट्र में भी एक मान्यता प्राप्त पार्टी बने।

## स्वतंत्र भारत में बहुजन समाज निर्भर क्यों?

वर्ष 1997 में भारत के मनुवादी हुक्मरानों ने 'स्वतन्त्रता' की स्वर्ण जयंती मनाने का फैसला किया। उनके लिए इस अवसर पर रंगरेलियाँ मनाने के कई कारण हो सकते थे लेकिन देश का 85 फीसदी बहुजन समाज को कि 'आजादी' के 50 वर्ष बाद भी आज तक दूसरों पर निर्भर है, उसके पास इस तरह की रंगरेलियाँ मनाने का कोई कारण नहीं है। आज भी हमारा समाज दूसरों के खेतों पर मजदूरी करता है, उनके अपने खेत नहीं हैं। 10 करोड़ लोग अपने-अपने गाँवों को छोड़कर शहरों में इसलिए आये हैं क्योंकि वे दूसरों पर निर्भर हैं। जब हमने बहुजन समाज पार्टी की स्थापना की उस समय दलित, पिछड़े वर्गों के लोग दूसरों पर निर्भर थे। 'टिकट' लेने के लिए वे मनुवादी दलों के आगे-पीछे भागा करते थे। राजनैतिक पार्टियाँ कुछ और नहीं बल्कि 'टिकट' छापने की मशीनें हैं। तो हमने सोचा कि क्यों न हम भी अपनी एक ऐसी ही मशीन बनायें। इसलिए 14 अप्रैल, 1984 को हमने बी.एस.पी. बनायी।

## आज केवल प्लेटफार्म टिकट नहीं

मार्च 1985 में उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों में हमने 237 उम्मीदवारों को टिकट दिये। मैंने अपने उम्मीदवारों को बोला, कि "हमारे टिकट केवल

प्लेटफार्म टिकट हैं और आप इन टिकटों की सहायता से लखनऊ नहीं पहुँच सकते हैं।" उस समय हमारे 'टिकट' पाने के लिये कोई मारा-मारी नहीं होती थी। लेकिन आज हमारे 'टिकट' की बेहद माँग है। आज उत्तर प्रदेश में बी.एस.पी. के प्रत्येक उम्मीदवार को एक लाख से अधिक वोट पड़ते हैं। आज हमारे टिकट मात्र 'प्लेटफार्म टिकट' नहीं रह गये हैं, बल्कि हमारा टिकट लेकर आप लखनऊ ही नहीं बल्कि दिल्ली में भी पहुँच सकते हैं। आज हमारे टिकट के लिए इतनी माँग आखिर किस कारण से है?

## कांग्रेस ने बी.एस.पी. को लोकप्रिय बनाया

1984 के (लोकसभा चुनावों के आधार पर) चुनावों में कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश में 425 में से 410 सीटें जीती थीं। 1985 के विधानसभा चुनावों में उन्हें केवल 265 सीटें ही मिल सकीं बी.एस.पी. की उपस्थिति के कारण 145 सीटों से हाथ धोना पड़ा। इस हानि से निराश और कुंठित होकर उन्होंने बी.एस.पी. को 'चमारों की पार्टी' कहकर प्रचारित करना शुरू कर दिया। कांग्रेस के इस प्रचार से हमें निश्चित रूप से फायदा हुआ। हमारी पार्टी उत्तर प्रदेश के चमारों में बेहद लोकप्रिय हो गयी। 1985 के चुनावों में हमें केवल 2% वोट मिले थे। 1989 के चुनावों में हमारा वोट प्रतिशत बढ़कर 9%, 1991 में 11%, 1993 में 20.6% हो गया। 1996 के लोकसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश में हमें 29% वोट मिले। हमने यह सब 'जाति' को अनदेखा करके हासिल नहीं किया बल्कि हमने इसके अस्तित्व को स्वीकार करके और इसको अपने फायदे में इस्तेमाल करके ही उत्तर प्रदेश में यह सफलता हासिल की। आज कांग्रेस 'जाति' का फायदा उठाने में असमर्थ है और हमने 'जाति' का इस्तेमाल करके अपनी शक्ति को कई गुना बढ़ाया है और आगे भी बढ़ायेंगे।

## महाराष्ट्र का सबक

आज यहाँ महाराष्ट्र से आये कई लोग मौजूद हैं। मैंने इन लोगों से काफी कुछ सीखा है। **अम्बेडकर मूवमेंट चलाने के लिए आधा सबक मैंने बाबा साहेब अम्बेडकर से सीखा और बाकी का आधा सबक मैंने महाराष्ट्र के महारों से सीखा। बाबा साहेब से मैंने यह सीखा कि**

मूवमेंट किस प्रकार चलाया जाना चाहिए। महाराष्ट्र के महारों से मैंने यह सीखा कि मूवमेंट को किस तरह नहीं चलाना चाहिए। किसी मूवमेंट को चलाने के लिए केवल यह जानना जरूरी नहीं है, कि उसे किस तरह चलाया जाये, बल्कि यह जानना भी जरूरी है, कि उसे किस तरह नहीं चलाया जाना चाहिए। अगर आपको यह मालूम नहीं कि कोई मूवमेंट किस तरह नहीं चलाया जाये तो आप यह भी नहीं जान पायेंगे कि उसे किस तरह चलाया जाना चाहिए।

महारों ने 'जाति' के हथियार को ठीक तरह से इस्तेमाल नहीं किया। उनका कहना था कि अब वे बुद्धिष्ट हैं और अब वे महार नहीं रहे हैं लेकिन इसके साथ-साथ वे 'महार' की हैसियत से रिजर्वेशन के लिए लड़ते रहे। उन्होंने महार से बौद्ध बने लोगों के लिए भी आरक्षण की माँग की। आप लोगों (महारों) ने 'जाति' की बदबू को हिन्दू धर्म से लेकर बौद्ध धर्म में भी भर दिया। 'जाति' हिन्दू धर्म की वह 'सड़ी हुई दुर्गन्ध' है, जिसने पूरे विश्व को प्रदूषित कर दिया है।

## आरक्षण के सौ वर्ष

26 जुलाई, 1902 को कोल्हापुर के छत्रपति शाहूजी महाराज द्वारा दलितों की शिक्षा संस्थानों और सरकारी नौकरियों में आरक्षण की सुविधा दी गयी। 26 जुलाई, 2002 को हम आरक्षण के सौ वर्ष पूरे कर लेंगे आरक्षण लेने के लिए सौ वर्ष काफी हैं। अब मैं यह अपनी जिम्मेदारी समझता हूँ, कि अपने लोगों को आरक्षण लेने के लिए नहीं, बल्कि दूसरों को आरक्षण देने के लिए तैयार करूँ। हम दूसरों को आरक्षण देने लायक कैसे बन सकते हैं? यह बात कहना और समझना तो आसान है, लेकिन अमल में लाना मुश्किल काम है।

आरक्षण देने लायक कौन होता है? केवल हुक्मरान ही दूसरों को आरक्षण दे सकते हैं। यहाँ तक कि खुद अपने समाज को लाभ पहुँचाने और उनके हितों की रक्षा के लिए आपको शासन-जमात बनना होगा। इसलिए हमें इस देश का शासक बनने के लिए अपने आपको तैयार करना चाहिए। हमें शासक बनना है। केवल यही एक उपाय है।

लेकिन प्रश्न यह है, कि 'जाति' के शिकार लोग शासक कैसे बन सकते हैं?

एम.पी./एम.एल.ए. बनना जरूरी है अथवा अम्बेडकर मूवमेंट चलाना?

मैंने बाबा साहेब अम्बेडकर को नहीं देखा, जब वे जिंदा थे, और न ही उनको कभी सुना था। मैंने अम्बेडकरवाद को महाराष्ट्र के नेताओं से ही सीखा है। श्री बाजीराव काम्बले, जो आज यहाँ नीली टोपी पहने मेरे सामने बैठे हैं, उनमें से एक हैं जिन्होंने मुझे अम्बेडकरवाद की शिक्षा दी। जब महाराष्ट्र के अम्बेडकरवादी नेता 'टिकट' के लिए एम.एल.ए./एम.पी. नहीं बन सकते हैं। मैंने उनसे पूछा कि "ज्यादा जरूरी क्या है? एम.एल.ए. बनना या अम्बेडकर का मूवमेंट चलाना?" मेरे विचार में अम्बेडकर का मूवमेंट चलाना ज्यादा जरूरी था इसलिए मैंने मूवमेंट चलाने का फैसला किया। यह खयाल मेरे मन में भी आया था कि मूवमेंट को अच्छी तरह से चलाने के लिए हमें भी एम.एल.ए. बनाने चाहिए। लेकिन जरूरी सवाल यह था कि कौन सी पार्टी हमें ऐसे एम.एल.ए. देगी जो हमारा (अम्बेडकर) मूवमेंट भी चला सकें? ऐसे एम.एल.ए. केवल हमारी अपनी पार्टी के जरिये ही बन सकते हैं। इसलिए मैं बम्बई छोड़कर लखनऊ आ गया।

## बाबा साहेब का समर्थन किस-किस जाति ने किया

मैंने भारतीय समाज में 'जाति' की सच्चाई के विषय में गहन सोच-विचार किया। मैंने उन जातियों के बारे में अध्ययन किया जिन्होंने बाबा साहेब अम्बेडकर का समर्थन किया था। उनके मूवमेंट का महाराट्र में महारों ने, परिहा लोगों ने तमिलनाडु में, माला जाति ने आंध्रप्रदेश में, जाटवों ने उत्तर प्रदेश में और चांडालों ने पश्चिमी बंगाल में समर्थन किया। लेकिन जब बाबा साहेब 1952 और 1954 के चुनावों में खुद ही जीत नहीं सके तो उनके समर्थकों ने सोचा, "जब बाबा साहेब खुद ही नहीं जीत पाते हैं तो हम किस प्रकार चुनाव जीत कर एम.पी./एम.एल.ए. बन सकते हैं।"

उसके बाद मैंने बाबा साहेब की चुनावी जीत के बारे में भी विचार किया। सन् 1946 में बाबा साहेब बंगाल की जैसोर और खुलना सीट से चुनाव जीते थे। यह कैसे हो पाया? इन दो क्षेत्रों में चांडाल लोगों की संख्या 52% थी। उन्होंने सोचा कि संविधान सभा में किसी और को भी भेजने की बजाय बाबा साहेब को भेजा जाना चाहिए। बाबासाहब इसलिए जीत पाये क्योंकि चांडालों के पास अधिक वोट थे। महार, परिहा, जाटव, माला

आदि जातियाँ चांडालों की तरह बहुत बड़ी संख्या में नहीं थीं। इसलिए वे सफल नहीं हो सके। इसी कारण उन्होंने अम्बेडकर मूवमेंट को छोड़कर जाना शुरू कर दिया।

बाबा साहेब अम्बेडकर का संघर्ष 'जाति' की शिकार हुई सभी जातियों के लिए था। लेकिन क्या महार, परिहा, माला आदि जातियाँ ही 'जाति' का शिकार थीं? क्या मनुवादी सामाजिक व्यवस्था का शिकार केवल यही जाति थीं? नहीं, केवल यही जातियाँ शिकार नहीं हैं।

## 'जाति' का शिकार 6000 जातियाँ हैं

मंडल कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार लगभग 1500 जातियाँ अनुसूचित जाति, 1000 जातियाँ अनुसूचित जनजाति और 3743 जातियाँ अन्य पिछड़े वर्ग के अंतर्गत आती हैं। इन जातियों की कुल संख्या 6000 से अधिक है। ये सभी ऐसी जातियाँ हैं जोकि मनुवादी सामाजिक व्यवस्था की शिकार रही हैं। कोई कम शिकार हुआ है तो कोई ज्यादा। लेकिन शिकार सभी 6000 जातियाँ हुई हैं। तो क्या हम विषमतावादी शोषणकारी 'जाति व्यवस्था' का मुकाबला करने के लिए इन सभी जातियों को संगठित नहीं होना चाहिए? इनमें से कुछ जातियों की संख्या बल अधिक है तो कुछ जातियों की संख्या बल कम है। अगर ये सभी जातियाँ आपस में टूटी रहती हैं तो सभी अल्पजन रहती हैं। लेकिन अगर ये जातियाँ आपस में भाईचारा पैदा करके संगठित हो जाती हैं तो यह बहुजन बन जाती हैं। इन लोगों की इस देश में जनसंख्या 85% है और यह अपने आपमें देश की सबसे बड़ी शक्ति है।

## बहुजन समाज में आपसी भाईचारा पैदा होना जरूरी है

जिस समय बहुजन समाज पार्टी की स्थापना की गई थी (14 अप्रैल, 1984), उस समय देश में 'बहुजन समाज' का निर्माण नहीं हुआ था। बहुजन समाज पार्टी तभी सफल हो सकती है, जबकि 'बहुजन समाज' बनाया जाये। इसलिए हमने 'जाति' की शिकार 6000 जातियों में आपसी भाईचारा पैदा करके बहुजन समाज बनाने का काम शुरू किया। पिछले 10 वर्षों में उसमें से भी विशेषकर पिछले 5 वर्षों में हम केवल 600 जातियों को ही जोड़ पाये हैं, जोकि जातियों की कुल संख्या का केवल 10% है।

केवल 600 जातियों को साथ जोड़ने भर से हमारी पार्टी आज देश की चौथी सबसे बड़ी पार्टी बन गयी है। अगर हम इनमें 400 जातियाँ और जोड़ लें तो यह संख्या 1000 तक पहुँच जायेगी और अगर हम ऐसा कर पाते हैं तो बहुजन समाज पार्टी इस देश की पहले नम्बर की पार्टी होगी। मैं अधिक बोलना पसन्द नहीं करता, हालाँकि मुझे बार-बार बोलना पड़ता है! मैं स्वयं बोलना नहीं चाहता, बल्कि मैं चाहता हूँ, कि मेरे द्वारा किये जाने वाला काम तथा उसके द्वारा सामने आने वाले नतीजे स्वयं बोलें! मैं अपने उन तमाम साथियो से क़हना चाहता हूँ जो कई मुद्दों पर मुझसे सहमत नहीं हैं, कि "मैं शायद गलत हो सकता हूँ, लेकिन आप मेरे द्वारा किए गए काम के नतीजों का आकलन करें। उनके बारे में आप क्या कहते हैं?"

इतनी सारी जातियों को जोड़कर एक मंच पर ला पाना एक बेहद मुश्किल काम था। इसलिए जोड़ने का प्रयास करने वाले की बहुत आलोचना भी की गयी और उसे ऐसा 'संभव' काम न करने की सलाह भी दी गई। लेकिन जब जोड़ने वाले ने अपना काम शुरू किया तो कोई भी ताकत उसे ऐसा करने से रोक नहीं पायी। उसने जोड़ने का काम बहुत खूबी के साथ किया। अगर आज तक वह 600 जातियों को जोड़ चुका है तो भविष्य में और जातियों को क्यों नहीं जोड़ सकता है? अवश्य जोड़ सकता है। 'जाति' का शिकार हुई सभी जातियों को एक साथ जोड़कर हम राजनैतिक सत्ता पर कब्जा कर सकते हैं और देश के शासक बन सकते हैं।

## मास्टर चाबी पर कब्जा जरूरी

बाबा साहेब अम्बेडकर ने कहा था, **"राजनैतिक सत्ता वह मास्टर चाबी है जिससे आप अपनी तरक्की और सम्मान के सभी दरवाजे खोल सकते हैं।"** महाराष्ट्र के हमारे साथी पिछले लगभग 25 वर्षों से महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी का नाम बदल कर 'बाबा साहेब अम्बेडकर यूनिवर्सिटी' रखने के लिए आंदोलन कर रहे हैं। आप लोग इसमें सफल नहीं हो पाये क्योंकि आप महाराष्ट्र में शासक नहीं बन पाये हैं। आपके पास राजनीति की मास्टर चाबी नहीं है। सन् 1989 में श्री राजीव गांधी लखनऊ आये और उन्होंने वहाँ 'अम्बेडकर यूनिवर्सिटी' की नींव रखी। महाराष्ट्र में जहाँ एक ओर कांग्रेस पार्टी यूनिवर्सिटी का नाम बदलने से साफ मनाकर रही थी, दूसरी ओर वही

कांग्रेस पार्टी लखनऊ में अम्बेडकर यूनिवर्सिटी की नींव रख रही थी, ऐसा क्यों हुआ? उत्तर प्रदेश के लोगों ने तो कभी भी अम्बेडकर यूनिवर्सिटी की माँग नहीं उठायी थी। यह माँग तो महाराष्ट्र के लोगों की थी। यह उत्तर प्रदेश में क्यों पूरी की जा रही थी? कांग्रेस यू.पी. में अम्बेडकर यूनिवर्सिटी बनाने को इतनी उत्सुक क्यों थी? ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उत्तर प्रदेश के लोग राजनैतिक सत्ता की मास्टर चाबी की तरफ अपना हाथ बढ़ा रहे थे। इसलिए शासक वर्ग उस मास्टर चाबी को यूनिवर्सिटी की आड़ में छिपाना चाह रहे थे (हँसी)।

उत्तर प्रदेश में सत्ता की मास्टर चाबी हासिल करके हमने एक नहीं, कई यूनिवर्सिटियाँ बनाईं, जिसके लिए महाराष्ट्र के लोग कई वर्षों से आंदोलन कर रहे थे। सन् 1994 में हमने कानपुर में शाहू महाराज यूनिवर्सिटी की आधारशिला रखी। 1996 में हमने महात्मा फूले यूनिवर्सिटी और डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर यूनिवर्सिटी बनाई। इसके अतिरिक्त दिल्ली के निकट नोएडा में गौतम बुद्ध यूनिवर्सिटी के लिए 200 एकड़ जमीन का अधिग्रहण भी किया। इसके अतिरिक्त हमने अपने महापुरुष को सम्मान देने तथा विकास के काम को और तेज करने के लिए यू.पी. में 17 नये जिलों की भी स्थापना की। इससे साफ जाहिर होता है, कि आप 'जाति' का अपने हित में इस्तेमाल करके राजनैतिक सत्ता की मास्टर चाबी को अपने हाथ में ले सकते हैं और अपने समाज को आत्मसम्मान तथा तरक्की की जिन्दगी मुहैया करा सकते हैं।

## हमारे समाज को अपना 'दलितपन' छोड़ना होगा

मैंने अभी तक 'जाति' के बारे में विस्तार से बोला है। अब मैं दलितों के बारे में भी कुछ बोलना चाहता हूँ। मैं भारत से बाहर कम ही जाता हूँ। मेरी पार्टी के लोग तथा अन्य साथी यह सोच रहे थे कि शायद मैं इस कन्वेंशन में शामिल होने के लिए न जा पाऊँ क्योंकि मैं भारत में दलितों की दुर्दशा देखकर बहुत अधिक दुखी हूँ। लेकिन मैं अधिक दुखी दलितों का 'दलितपन' देखकर होता हूँ। 'दलितपन' दलितों की सबसे बड़ी कमजोरी बन गया है। 'दलितपन' एक प्रकार का 'भिखमंगापन' बन गया है। जिस प्रकार कोई भिखारी कभी शासक नहीं बन सकता है उसी प्रकार बिना अपना

'दलितपन' छोड़े कोई समाज शासक नहीं बन सकता। माँगने वाले हाथों को (अपनी हथेली को ऊपर से नीचे की तरफ पलटते हुए) माँगने वाले की बजाय देने वाला बनना होगा। यानि कि उन्हें शासनकर्ता जमात बनना होगा। अगर आप शासक नहीं बन पाते हैं तो हमारी समस्याओं का कोई हल नहीं हो सकता है। लेकिन दलित अथवा भिखारी रहते हुए आप शासक कैसे बन सकते हैं। इसलिए आपको अपना 'दलितपन' छोड़ना होगा। अगर आप शासक बन जाते हैं तो आपकी सभी समस्याओं का हल आप स्वयं कर सकते हैं।

## मनुवाद अन्य सभी 'वादों' को नष्ट कर देता है

हमारे बुद्धिजीवी अक्सर ऐसा सोचते हैं, कि हमारी सभी समस्याओं का हल मार्क्सवाद, समाजवाद, साम्यवाद में है। मेरा मानना है, कि जिस देश में मनुवाद मौजूद है उस देश में कोई अन्य 'वाद' सफल नहीं हो सकता। क्योंकि कोई भी अन्य 'वाद' 'जाति' की सच्चाई को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए यह बुद्धिजीवियों का फर्ज है और मेरा भी फर्ज है, कि हम 'मनुवाद' और 'जाति' के अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए अपने लिए स्वयं किसी 'वाद' की रचना करें। मनुवादी समाज के लोग अक्सर बेरोजगारी की बात करते हैं। उन्हें लगभग एक करोड़ बेरोजगार उच्च वर्ग के सवर्णों के रोजगार को लेकर बहुत अधिक चिन्ता रहती है। लेकिन ये लोग उन 10 करोड़ भारतीय शरणार्थियों के रोजगार तथा अन्य तकलीफों को लेकर कोई चिन्ता नहीं दिखाते जो कि अनपढ़ और अकुशल हैं।

इन 10 करोड़ लोगों के बारे में कोई भी पार्टी चिन्तित दिखाई नहीं देती। लेकिन ये 10 करोड़ लोग हमारे समाज के लोग हैं। इसलिए केवल हमारी पार्टी ही उनके बारे में सोच सकती है। केवल हमारी पार्टी ही उनकी समस्याओं को हल कर सकती है। हम इस देश के शासक बनकर बहुजन समाज की सभी समस्याओं का हल आसानी से कर सकते हैं।

600 जातियों को आपस में जोड़कर उनमें भाईचारा पैदा करके आज हम देश की चौथी सबसे बड़ी पार्टी बन चुके हैं। 1000 जातियों को आपस में जोड़कर हम इस देश के शासक बन सकते हैं। मेरा पक्का विश्वास है, कि अगले तीन वर्षों में इस देश की शासन-व्यवस्था की बागडोर हमारे हाथों में होगी और हम इस देश के हुक्मरान होंगे।

## कांशीराम चमत्कार

मैं अपने विचारों को दूसरों पर जबरदस्ती थोपने का पक्षधर नहीं हूँ। मैं आपको सिर्फ अनुभव बता रहा हूँ। इससे फायदा उठाना या न उठाना आपके अपने ऊपर निर्भर करता है।

आप शासक बनकर एक 'जातिविहीन समाज' की स्थापना करने में सक्षम हो सकते हैं। आपकी सभी समस्याओं का यही हल मैं बता सकता हूँ, 'जाति' का फायदा उठाने वाले आखिर 'जाति' को नष्ट करना क्यों चाहेंगे, 'जाति' के शिकार हुए लोगों को ही यह काम स्वयं करना होगा। शासक ही जाति-व्यवस्था को समाप्त कर सकने में सक्षम हो सकते हैं। आप यह कह सकते हैं, कि मैं असंभव-सी बात कह रहा हूँ। लेकिन अपनी जिन्दगी में मैंने हमेशा ही असंभव से लगने वाले कामों में हाथ डाला है और साथ-ही-साथ उनमें सफलता भी हासिल की है। इसी का नाम 'कांशीराम चमत्कार' है। आज 'कांशीराम चमत्कार' एक 'राष्ट्रीय' स्वरूप अख्तियार करता जा रहा है।

इसलिए मेरा आपको यही संदेश है, कि आप सही सोच रखते हुए एक 'जातिविहीन समाज' के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ें। अंत में मैं आपसे यही कहूँगा, कि आप शासक बनकर ही एक जातिविहीन समाज की स्थापना कर सकते हैं। **शासक ही एक नये समाज का निर्माण कर सकता है।**

**जय भीम।**

**जय भारत।।**